अनसुलझे सवालों से घिरा किसान
('आखरी छलांग', 'फाँस' एवं 'अकाल में उत्सव' के संदर्भ में)

डॉ. शकुंतला एस.पाटील,
समृद्धि 33/Q, सेना नगर,
अल-अमीन, गेट 2, विजयपुर
ई-मेल:shakuntalagouda7@gmail.com
फोन : 94815 33884

शकुंतला एस.पाटील, अनसुलझे सवालों से घिरा किसान ('आखरी छलांग', 'फाँस' एवं 'अकाल में उत्सव' के संदर्भ में)आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(44-50)

मनुष्य अपने जीवनयापन के लिए विभिन्न व्यवसायों पर आधारित है, जिनमें कृषि भी एक है। इतिहास के पन्नों में नजर डाले तो कृषि ही मनुष्य जीवन के लिए प्रमुख साधन बनी रही है। जिससे मनुष्य समाज में सुख व शातिं से जीवन गुजर कर रहा था। 'परिवर्तन प्रकृति का नियम है', यह यथार्थ भी है। इसी के चलते समाज में भी परिवर्तन आने लगा। स्थितियाँ भी बदलने लगी। आज इक्कीसवी सदी का दौर चल रहा है, किन्तु किसान के जीवन में कोई प्रमुख अंतर नजर नहीं आता है। यह बात सर्ववीदित है कि, 'भारत कृषि प्रधान देश' है। भारत में तो लगभग 70% प्रतिशत से भी ज्यादा लोग खेती करके अपना जीवन बिताते है। साथ ही किसान ही वह आधार है देश के लिए जिसने न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाई है। बल्कि देश के आर्थिक प्रगति में भी बहुमूल्य योगदान दे रहा है। इसी कारण से तो किसान को **"देश की रीढ़ की हड्डी"** माना जाता है।

'किसान' अपने अथक परिश्रम से पूरे देश की आर्थिक प्रगति में अपना योगदान देता है। लेकिन गत वर्षों से हम देखते आ रहे हैं कि किसान का जीवन विभिन्न संकटों से भरा है। कितने ही किसान अपने जीवन को अभशाप मानकर जीवन को कोसते है। जहाँ एक समय था कि किसान के जितना सुखी और

कोई नहीं कहा जाता था। किन्तु प्रस्तुत समय में किसान की स्थिति इसके विपरीचत हो गई है। आज कितने ही किसान अपने इस कर्म से पीछा छुडाना चाहते हैं। कितने ही किसान शहरों में मजदूर बनने को तैयार हो रहे है। और कितने ही किसान अपने शोषण भरे जीवन का आत्महत्या जैसे कठिन मार्ग को चुनकर अंत कर रहे हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि किसान के जीवन में उठनेवाले इन समस्याओं का अंत कब होगा? किसान का जीवन जीवन जितना सरल नजर आता है उतना है नहीं। सुख, शांति, व सरलता की अपेक्षा रखनेवाला किसान आज उनसे भी वंचित होता जा रहा है। उसके जीवन में कई समस्याएँ सवाल बनकर खड़ी हो रही है। वह कुछ हद तक लडता है। और अगर असमर्थ हो जाए तो अंत में स्वयं का अंत कर लोता है। आजादी के बाद जहाँ सरकार ने किसानों के लिए कई योजनाएँ बनाई किन्तु वह सफल रूप में कार्यरत न हो पाई। नगरीकरण, बाजारवाद, भमंडलीकरण के चलते जमीन बेची-खरीदी जा रही है, उससे तो किसान की समस्याएँ कम नहीं हो रही है। बल्कि औऱ अनेक मुसीबतों का सामना उसे करना पड रहा है। साथ ही बची-कुची जमीनों को लेकर किसान या तो साहुकारों के कर्ज तले दब जाते है या तो शहरों में बैंकों के। बस दोनों ही तरफ़ से उनकी जिंदगी पिसती ही जाती है।

साहित्य एक ऐसा माध्यम है जहा समाज का यथार्थ अंकित होता है। मनुष्य जीवन की यातना हो, विद्रोह हो, चेतना हो, शोषण हो या संघर्ष। इसी कारण आधुनिक साहित्य में किसान जीवन के यथार्थ अंकन को भी हम देखते हैं। जहाँ समाज के विविध पहलूओं का अनावरण होता है। वहीं किसान के संघर्षभरे जीवन को भी साहित्यकारों ने वाणी दी है। साहित्य में जहाँ प्रेमचंद के गोदान उपन्यास को किसान जीवन का महाकाव्य माना जाता है। वही उनके बाद कई अन्य साहित्यकारों ने भी किसान के जीवन को अपनी रचनाओं में उकेरा है। नागार्जुन, मार्कण्डेय, रेणु, शिवप्रसाद सिंह जैसे कथाकारों ने ग्रामीण जीवन को ही अपने साहित्य का केंद्र माना था। उसी प्रकार बदलते समय के साथ नये-नये साहित्यकारों ने अपने समय के समाज में फैली स्थितियों को वाणी दी है। खासकर नई सदी की बात करें तो किसान के पीडाओं से भरे जीवन को लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का कार्य किया है। जिनमें किसान जीवन के संघर्ष को अभिव्यक्त करनेवाले प्रमुख उपन्यास हैं- 'आखरी छलांग',

'फाँस', 'अकाल में उत्सव'। समय के साथ समाज में कितने ही परिवर्तन आए हैं। लेकिन किसान की स्थिति आज भी वैसी की वैसी है।

शिवमूर्ति द्वारा रचित **'आखरी छलांग'** उपन्यास सन्2008 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास किसान की पीड़ा को दर्शाता है। जिसमें कई सवाल छुपे हुए हैं। ग्रामीण समुदाय में किसान जीवन एक प्रकार से उलझता जा रहा है। पहले जहाँ किसानों के गाँवों में जमींदार, साहूकार लोगों द्वारा लूटा जाता था। प्रस्तुत समय में बाजारवाद एवं भूमंडलिकरण के कारण उन्हें जीवन में अनेकों कष्ट उठाने पड रहे हैं। और उस पर सरकार की किसान उन्नति का योजनाएँ जो कभी सफल रूप में कार्यरत नहीं हो पाती उन सब ने किसान के जीवन को बद से बदतर बना दिया है। **'आखरी छलांग'** में भी कई ऐसी स्थितियाँ देखने का मिलती है। पहलवान जो की एक किसान है, जिसके पास पाँच बीघा जमीन है। फिर भी वह अपने जीवन में सुखी नहीं है। बेटे को इंजीनीयरिग की पढ़ाई करवाने की जिम्मेदारी और बेटी को एक अच्छे समृद्ध परिवार में शादी करवाने की चिंता से वह ग्रस्त है। विवाह के नाम पर होनेवाले दहेज प्रथा उसकी चिंता कारण है। जब उसकी बेटी को देखने आते है तो कहते है- "क्या है इनके पास जो बाबूजी इस तरह लट्टू हुए जा रहे हैं। न कोई कोटा परिमिट न कोई कॉलेज भट्ठा, न टरक ट्रैक्टर न कोई ठेका पट्टा। कहाँ से सँभालेंगे हमारी हजार लोगों की बारात? शादी का बजट कितना है? कौन सी गाड़ी देंगे? साफ-साफ बात होनी चाहिए।" पहलवान की चिंता यही समाप्त नहीं होती बेटे की पढ़ाई को लेकर वह सोचता है- "उनके जैसे चार एकड़ की जोत वाला किसान अगर साल की दोनों फसलों की कुल पैदावार बेच दे तो भी खाद, बीज सिंचाई, मजदूरी खर्च घटाने के बाद भी कुछ हाथ लगेगा उससे एक साल की फीस का इंतजाम होना मुश्किल है। चार साल तक इस तरह की फीस भरिये तब कहीं बेटा इंजीनियर कहलाने लायक होगा।" जितना किसान अपने फसल को उगाने के लिए खर्च करता है उससे अगर उसे घाटा ही मिला तो वह अपने आरमानों को, सपनों को कैसे पूरा करें? बस वह पूरी जिंदगी कर्ज के तले ही दबकर रह जाता है। आनेवली पीढ़ी को भी उज्वल भविष्य देने की उम्मीद में जीवन को खत्म कर लेता है।

किसान की इस दयनीय स्थिति के बारे में लेखक कहते है- "किसान के घर में जन्म लेकर न पहले कोई सुखी रहा है न आगे कोई सुखी रहेगा। इन्हीं परिस्थितियों में जिंदगी की नाव खेना है।" इन्हीं सब जीवन की दुविधाओं से ग्रस्त पहलवान अपने जीवन का अंत कर देता है। वह उसके जीवन की आखरी छलांग है।

संजीव का **'फाँस'** उपन्यास भी किसान के जीवन त्रासदी को व्यक्त करनेवाला उत्तम उदाहरण है। इसका प्रकाशन सन् 2016 में हुआ। लेखक ने महाराष्ट्र के यवतमाल के वनगाँव के किसान जीवन के दारूण प्रसंगों को दिखाया है। गाँवों में फैली गरीबी, अंधविश्वास, अशिक्षा, पुरानी रूढ़ियों का भी चित्रण करते हैं। उपन्यास का कथानायक शिबू की छोटी सी खेती है। वह अपने पत्नी व दो बेटियों का साथ रहता है। एक तरह जहाँ शिबू की बेटियाँ रूढ़ि-परंपराओं के चलते खुलकर कुछ कर नहीं सकती और दूसरी तरफ अपने खेति में आमदनी कम और हर साल नुकसान होने के चलते वह खेती करके भी खुश नहीं है।

जब उसका एक बेल मर जाता है तो पैसे न होने के चलते और कर्ज की भरपाई के डर से वह अपने बहनोई के भैंस को जोत का जोडा बनाकर जोतता है। गाँववाले उस पर हँसते है पर फिर भी वह मेहनत करता है। कर्ज लेकर किसान की जिंदगी अनेक संकटों से भर जाती है। क्योंकि कर्ज तो हीरोहोंडा गाडिय़ों, ट्रैक्टरों को जल्दी मिल जाता है। लेकिन खेती के संबंध में अगर देना हो तो उन्हें हजार बार भागदौडी करनी पडती है। घूस देनी पड़ती है। ऐसी हालत में वह मजदूरी तक करने को तैयार हो रहा है। सदा घोषणा करता है – "अगले साल से अपुन खेती छोड़ रहा है।" शिबू भी अपनी हालतों को देखकर एख पल के लिए कहता है- "अकेला होता तो चला जाता कहीं नागपूर, नासिक, मुंबई.....लेकिन ये दो-दो मुलगियाँ(बेटियाँ), बायको(पत्नी) इन सब को फेकर कहाँ जाऊँ।" लेकिन वह जा नहीं पाता। इन स्थितियों को देखकर शिबू की पत्नी शकुन कहती है- "इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है।"

ऐसी स्थिति उपन्यास में आशा की है। वह एक आत्मनिर्भर स्त्री बनकर खेती करते हुए अपने पति और दो बेटियों का जिम्मेदारी उठाए हुए है। अनेक समस्याओं से, चुनौतियों से ग्रस्त उसके जीवन में खुशी का कोई आशा की किरण नजर नहीं आती। फिर भी वह अपने मेहनत से सब कुछ सँभालते हुए गुजारा करती है। लेकिन पानी की सुविधा ठीक समय पर नहीं हो पाती। और बेमौसम की बारिश के कारण उसकी कपास की फसल पूरी तरह से भीग जाता है। जिससे बहुत नुकसान होता है। और ऐसी स्थिति में वह हताश होकर आत्महत्या कर लेती है। उसकी दारूण स्थिति ऐसी है कि उसके मरने का बाद उसे कफन तक नसीब नहीं होता। यह प्रसंग प्रेमचंद की कफन कहानी की याद दिलाता है।

ऐसी ही समस्या से ग्रस्त किसान जीवन को पंकज सुबीर के उपन्यास **'अकाल में उत्सव'** में पाते है। रामप्रसाद जो की कथा का नायक है। अपनी दो बीघा जमीन में उपजाने वाले फसल में से उसे अपने पिता के किए कर्ज को चुकाना है, शहर में रहनेवाले भाई को उसका हिस्सा देना है और अपने परिवार को चलाना है। इतना ही नहीं घर-परिवार में कोई भी तीज-त्यौहार या तीन बहनों के लिए लेन-देन की बात आती है तो वह भी उसीके के कंधे पर। जीवन में इतनी समस्याएँ क्या कम थी कि बैंक में उसके नाम पर फर्जी क्रेडिट कार्ट बनाकर किसीने तीस हजार निकाल लिए है। अब वह गरीब किसान बैंक के आए नोटिस को स्कूल मास्टर से पढ़वाकर जान जाता है। उसके के तो पैरों तले की जमीन निकल जाती है। दूसरी ओर गाँव में पर्यटन विभाग में उत्सव के लिए आये फंड को लैप्स होने से बचाने के लिए कलेक्टर और अन्य अधिकारी अपना स्वार्थ साधने में जुटे हुए हैं। रामप्रसाद जब कलेक्टर से मिलता है तो वह उसे झूठा दिलासा देकर भेज देता है। कलेक्टर के पांडे से कहता है- "हाँ यह बात तो सही है। एक काम करो, इस प्रकार के जो किसान हमारे पास आ रहे हैं, उनको उत्सव तक थोड़ा मैनेज करो, अपने लोगों को ब्रीफ़ कर दो जाकर थोड़ा कि ऐसे मामले में नरमाई से काम लें उत्सव हो जाने तक। उत्सव के बाद इस प्रकार के आवेदन लेना भी बंद करो और कोई सहयोग मत करो। सीधे-सीधे कह दो कि आप जानो और बौंक जाने, हमें उससे कोई मतलब नहीं है।"

अधिकारियों के झूठे दिलासे को भोले किसान सच मान बैठ जाते है। इसका उनकी अशिक्षा होती है। अपने ऊपर आए संकटों से मुक्त होने के लिए वह अपनी पत्नी के जेवर तक बिका देते है। फिर भी इन समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल पाती। सरकार ने जो योजनाएँ, कानून बनाए है उससे तो किसानों को लाभ से ज्यादा नष्ट ही हो रहा है। गरीबी के कारण वह दो वक्त की रोटी के लिए भी तरह जाते है। और दूसरी ओर सरकार के ये भ्रष्ट अधिकारी अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ते। रामप्रसाद के लिए बाहरी कोशिशों से तो कुछ फायदा हुआ नहीं। और प्रकृति ने भी उसका साथ नहीं दिया। बारीश के कारण उसकी सारी फसल बरबाद हो जाती है। अंत में उसके खेत बिकने के कगार पर होते है तो उसकी कीमत एक एकड़ की केवल एक हजार बताई जाती है। जिसे सुनकर उसका मानसिक रूप से बेहाल हो जाता है। पटवारी कहता है- "कँई गमन्यो(पागल) हुइ ग्यो है कँई? वो ही रटे जइ रियो है। थारे बतइ तो दी कि एक एकड़ पर हजार, अने डेसिमल पे सौ रूपया। रटे मत। चल जा अब।"[i] खुद से बुदबुदाता हुआ जाकर कूँए मे लटककर आत्महत्या कर लेता है।

इन उपन्यासों को पढ़ने और किसान की जीवन की सारी समस्याओं को देखने बाद यही निष्कर्ष मिलता है कि संदर्भ अलग है, परिस्थितियाँ एक ही है। आज किसानों के समक्ष अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी एवं आत्महत्या जैसी अनेक समस्याएँ मुँह बाये खड़ी है। बाजारवाद के कारण किस तरह विश्व व्यापार के स्तर पर समझौतो किए जा रहे हैं। इन्हीं के कारण किसानों की आत्महत्या एक बृहत सवाल है समाज के लिए, सरकार के लिए। आज एक मामूली चपरासी की जिंदगी किसान की जिंदगी से बेहतर लगती है। कर्ज के कारण किसान भूमिहीन होते जा रहे है। जिसके बारे में भारत डोगरा कहते हैं- "आज़ादी के बाद भूमि सुधारों का जो कार्यक्रम बना था, इसका उद्देश्य यह था कि भूमिहीन किसानों को छोटा किसान बनाना है लेकिन हुआ यह है कि छोटे किसानों को भूमिहीन बनाया जा रहा है।" इन विचारों के बाद बस एक ही निष्कर्ष पाते है कि आखिर इस नई सदी के दौर में पहुँचने पर भी किसानों के दुःखों का अंत कब होगा? आखिर कब तक किसान अपने जीवन से घिरे इन अनसुलझे सवालों से, समस्याओं से मुक्त होगा?

संदर्भ ग्रंथ

[1] . आखरी छलांग- शिवमूर्ति, पृ.सं.84
[2] . आखरी छलांग- शिवमूर्ति, पृ.सं.89
[3] . आखरी छलांग- शिवमूर्ति, पृ.सं.83
[4] . फाँस- संजीव, पृ.सं.221
[5] . फाँस- संजीव, पृ.सं.137
[6] . फाँस- संजीव, पृ.सं.27
[7] . अकाल में उत्सव- पंकज सुबीर, पृ.सं.171
[8] . अकाल में उत्सव- पंकज सुबीर, पृ.सं.233
[9] . कथन(सं) उपाध्याय, रमेश, अप्रेल-जून 2007 (भारत डोगरा की रमेश उपाध्याय की बातचीत)

****